कर्मका महत्त्व, विशेषताएं एवं प्रकार

'कर्मयोग' ग्रंथमालाकी भूमिका

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।' (श्रीमद्‌भगवद्‌गीता, अध्याय २, श्लोक ४७) अर्थात आपका अधिकार केवल (कर्म) करना है । कर्मफलकी आपको इच्छा नहीं रखनी चाहिए ।

भगवानके इस आशीर्वचनमें कर्मयोगका सार समाहित है ।

कर्म अटल है । जीवित रहनेके लिए भी श्वास लेनेका कर्म करना ही पडता है । कर्म करते समय व्यक्तिका निरंतर अन्योंसे लेन-देन निर्मित होता है । साथ ही उसके प्रत्येक कर्मका पाप-पुण्यात्मक फल भी प्राप्त होत ा है । रागद्वेषादी स्वभावदोष, कुबुद्धि, अधर्माचरण, कर्म करते समय हो रही चूकोंके (गलतियोंके) कारण व्यक्तिके पाप बढते हैं । उसका दुःखमय फल भी इस अथवा अगले किसी जन्ममें भुगतना ही पडता है । इस प्रकार जन्म-मृत्युका चक्र चलता ही रहता है । इसीको 'कर्मबंधन' कहते हैं । ऐसेमें 'जन्म-मृत्युके चक्रसे कैसे मुक्ति पाएं', इसका मार्ग कर्मयोग बताता है ।

कर्मफल न हो, तो ही मनुष्य बंधनमुक्त हो सकता है । किसी भी कर्मकी आसक्ति, अभिमान तथा फलकी अपेक्षा न रखना, 'प्रत्येक कर्म ईश्वरकी पूजा करनेके भावसे करना', कर्म होनेपर उसे ईश्वरके चरणोंमें अर्पण करना इत्यादिसे कर्ममें निष्कामता उत्पन्न होती है । ऐसा होनेपर कर्मफल लागू नहीं होता । निष्कामताके कारण अंतःकरण निर्मल होकर निरंतर आनंदकी अनुभूति होती है ।

कर्मयोग यह भी सिखाता है कि, ईश्वरप्राप्तिके उपरांत भी कर्मसंन्यास न लेकर समाजको साधनाकी ओर मोडनेका कार्य करते रहना चाहिए ।

दैनिक जीवनमें कर्म करते समय ही 'कर्मयोग'को यथार्थरूपसे आचरणमें कैसे लाएं, इसपर यह ग्रंथमाला सुबोध मार्गदर्शन करती है । विषयकी व्याप्ति एवं ग्रंथोंकी पृष्ठसंख्याकी सीमाका विचार कर 'कर्मयोग' का विषय विभिन्न ग्रंथोंमें विभाजित किया है । (अन्य ग्रंथोंका परिचय इसी ग्रंथके अंतमें दिया गया है ।) **- संकलनकर्ता**

प्रस्तुत ग्रंथकी भूमिका

जीवनके सारभूत अंग 'कर्म'के महत्त्व एवं विशेषताओंकी जानकारी होनेपर हमारी कर्मकी ओर देखनेकी दृष्टिमें परिवर्तन हो जाता है, उसी प्रकार कर्म करनेके संदर्भमें हमें एक नया परिमाण मिलता है । इस दृष्टिसे प्रस्तुत ग्रंथमें कर्मका हमारे जीवनमें महत्त्व; कर्म सफल होने हेतु आवश्यक घटकोंका महत्त्व; तथा कर्मकी विशेषताएं जैसे कि, कर्मका प्रवाह अखंड रहना, मन, वाणी एवं शरीर के कर्मोंका प्रवर्तक मन होना, पूर्वजन्मके कर्मोंके अनुसार मनुष्यको जन्म मिलना इत्यादिके विषयमें बताया गया है । विहित एवं निषिद्ध कर्म; नित्यनैमित्तिक कर्म; वर्णाश्रमके अनुसार कर्म; स्वधर्मकर्म; सात्त्विक, राजसिक एवं तामसिक कर्म इत्यादिके विषयमें जानकारी उपलब्ध होनेके कारण कर्मके विविध पहलुओंका भी अध्ययन होगा तथा उनका जीवनपर होनेवाला परिणाम ध्यानमें आएगा ।

ज्ञानयोग एवं भक्तियोगकी अपेक्षा कर्मयोग वास्तविक जीवनसे अधिक संलग्न है । उसका आचरण कर आध्यात्मिक उन्नति करनेकी इच्छा साधकोंके मनमें निर्मित हो, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । **- संकलनकर्ता**

सनातनके ग्रंथ नियमितरूपसे क्रय करनेवाले पाठकोंसे विनती !

सनातनके नूतन ग्रंथोंके विषयमें जानकारी पानेके लिए संपर्क करें –

prasarsahitya@gmail.com अथवा चल-दूरभाष : ९३२२३१५३१७

'सनातन'के ग्रंथ 'ऑनलाइन' क्रय हेतु उपलब्ध - www.SanatanShop.com

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।]

卐	**संस्कृत भाषानुरूप हिंदीके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन !**	९
卐	**मुखपृष्ठ संकल्पना**	१०
卐	**'कर्मयोग' ग्रंथमालाकी भूमिका**	११
卐	**आध्यात्मिक परिभाषामें वैशिष्ट्यपूर्ण प्रस्तावना !**	१२
卐	**भूमिका**	१७
१.	**'कर्मयोग' शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ**	१८
२.	**कर्मकी उत्पत्ति**	१८
३.	**क्रिया एवं कृत्य**	१९
४.	**कार्य**	२०
	* कार्य सिद्ध (सफल) होने हेतु आवश्यक घटक एवं उनका महत्त्व	२०
	* कर्म (कार्य) बिगडनेका कारण	२७
५.	**'कर्म' शब्दकी व्युत्पत्ति एवं अर्थ**	२८
६.	**कर्मका उद्देश्य**	३४
७.	**कर्मका महत्त्व**	३४
८.	**कर्मकी विशेषताएं**	३६
	* जीवके जन्म-मृत्युके चक्रमें फंसनेका एकमात्र कारण कर्म ही होना	३९
	* उचित व अनुचित कर्म कौनसे, यह बताना विद्वानोंको भी कठिन	४२
९.	**कर्मके प्रकार**	४५
	* साधारणतया प्रकार (ऐच्छिक तथा अनैच्छिक क्रिया / कर्म)	४५
	* साधना हेतु पूरक कर्म (नित्यकर्म, श्रौत, स्मार्त, पौराणिक कर्म इ.)	४९
卐	**'कर्मका महत्त्व, विशेषताएं एवं प्रकार' संबंधी गहन ज्ञान**	६७
卐	**संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण**	७०